

RājTa. (Ka.) 3. 97; 3. 336; 4. 376; अज्ञसासौ बलाप्रे। ... निजतेजस्तेजयामास पूर्वम् RāghPaṅ. (Ka.) 7. 48 (comm. तत्त्वेन प्रकाशेन इत्यर्थः); मध्यं तदाज्ञया शेषपैलाभ्यां कृतमज्ञसा AnuVyā. 4A. 10 (on 1.1); वयं त्वां श्रुतियुक्तिभ्यां बध्वा-सच्छास्त्रमज्ञसा AnuVyā. 7A. 2 (on 1.10); 7B. 9 (on 1.11); प्रत्यक्षादिविरोधाच्च दुष्टः पक्षोऽयमज्ञसा UpādhiKha. 238B. 10; ŚrūtaPra. 113. 19 (on i. 4. 6); VedāntKau. 133. 23 (on i. 4. 16); शुभगतिषु धियो यश्चोदयत्यज्ञसा नः ŚatDū. 116. 20; तमः प्रदोषे तरुणिमिन् कस्य वा समज्ञसं पश्यति वृष्टिरज्ञसा MadhuVi. 3. 25; ŚāringaPa. 2291; NyāySu. (Ja.) 499A. 2 (on iii. 2. 1); अस्वेतस्त्रव-मज्ञसा ब्रह्मसूत्राणाम् TattvPrakā. 3B. 4 (on i. 1.0); क्षमास्तु न रमेश्वर श्रुतिगिरः स्वरूपं तव प्रकाशयितुमज्ञसा विदधिरे पदं मूढताम् HariC. (Pa.) 146 (but comm. अज्ञसा सद्यः); PāñcRāRa. 45. 5; HariVi. 4. 55; तस्माद् यत्नात् समुद्भूत्य दुःशल्यं पुनरज्ञसा ŚilpaRa. i. 4. 26; प्रतिविम्बेशजीवैक्यवादयोर्नैतदज्ञसा Vedānt-SiSūMañ. 4. 22 (comm. असामञ्जसम्); तत्त्वे त्वद्वाज्ञसा द्रयम् AmaK. 2872; तत्त्वपूर्णमज्ञसा AnekāSa. 803; AbhidhāRāMā. 5. 96; AgniP. 360. 27; Vaija. 286. 31; निश्चयेऽद्वाज्ञसा द्रयम् ŚesaNā. 1743; ViśvaPra. 191. 64; DharK. 2975; AnekāK. 1005; अज्ञसाशब्द आख्यातस्तत्त्वपूर्णार्थयोरपि MediK. 202. 81; NānārthaMa. 1918; ŚabdaRa. (Vā.) 4581; ViśvaLoK. 418. 74; KośaKaTa. 2. 2975; KalpaK. 459. 16; **1 B** sincerely, devotedly, with great respect स भीष्मं पूजयामास वाष्णैयो वाग्भिरज्ञसा MahāBhā. v. 87. 15; अमराः ... देवं पूजयामासुरज्ञसा VāmaP. 62. 25; तत्पुत्राः श्राद्धदानेन तर्पयामासुरज्ञसा VarāP. 13. 13; गुहः कृताञ्जलिरज्ञसा रघुनाथमनुनाथितवान् RāmāCaiñ. 2. 48 (1); जोगराजमुपाध्यायं ध्यायन्तं शुभमज्ञसा ŚrīKaC. 25. 107; अज्ञसा परमादरेण NyāySu. (Ja.) 615A. 3 (on iv. 1.2); आराधयन् ... गुरुमज्ञसा शिवयोगी ... सिद्धिं कामप्युपालभन् ParamāKā. 141. 90; **1 C** completely, entirely अतीक्ष्णदण्डांश्चतुरो वर्णाञ्जुगुपुरज्ञसा HariVam. 41. 7 (comm. साक-ल्येन); अज्ञसा रिगुगणश्च विकीर्षांश्चेति तत्र किरते स नृणां वाक् DvyaśraKa. 8. 24; प्रतापकेसरी... निरीक्ष्य... निरुद्धमज्ञसा पुरम् ĀnandRa. 7. 3 (? 4); **1 D** in truth, in reality अतो यच्च किमुच्चारणमात्रेणोपकुर्वन्तीति सिद्धव्ययोगाभिधानं नैतदज्ञसैव द्रष्टव्यम् TantrVā. 50. 19 (on i. 2.31); **1 E** clearly, distinctly इत्यज्ञसा न विचकास न संचुकोच पर्याकुलं कुमुदकाननचक्रवालम् HarVi. 19. 48; **1 F** reliably, trustworthily यद्यात्मोपासनाप्राप्तिः क्वचित् संभाव्यतेऽज्ञसा BrĀraU-BhVā. i. 4. 927 (comm. प्रमाणनिबन्धनेन); **1 G** by right knowledge अज्ञसा आत्मज्ञानेनेत्यर्थः BālaKri. i. 57. 7 (on 1.50) (while quoting ManuSm. स गच्छत्यज्ञसा विप्रो ब्रह्मणः सन्न शाश्वतम्); **1 H** in absolute reality न वा मायामात्रम् । अज्ञसैव विश्वसृजो रूपम् । तत्तु न चक्षुषा ग्राह्यम् VedāntSā. (Rā.) 43. 6 (on i. 1.21); **1 I** by virtue of being chief, principally तमेव शास्त्र-प्रभवं प्रणय जगद्गुरुणां गुरुमज्ञसैव AnuVyā. 1A. 3 (on 1.1); जगत एतच्छा-स्त्रप्रवक्तृणां ब्रह्मादीनामज्ञसा मुख्यतया न तु वयोऽधिकत्वादिमात्रेण गुरुम् NyāySu. (Ja.) 3A. 11 (on i. 1.1); तत्त्वं मुख्यत्वमज्ञसा AnekāK. 1005; **1 J** under the pretext अज्ञसा छद्मना VisamaPaVi. on MahāBhā. iv. 33. 4 (घोषान् विद्राव्य तरसा गोधनं जहुरज्ञसा); **2** directly, straightaway, in a straightforward way, without hindrance or difficulty, easily, primarily, without any intermediary, continuously, in a straight line त्वं चकर्थं मनवे स्थोनानपथो देवुत्राज्ञसैव यानान् RV. x. 73. 7; अज्ञसा सत्यमुप-गेषम् TaiS. I. ii. 10. 2 = VājaS. 5. 5; क्षेत्रविदज्ञसा नयति TaiS. V. ii. 8. 5; वसिष्ठो वा एतेन वैडवः स्तुत्वाज्ञसा स्वर्गे लोकमपश्यत् PāñcBr. xi. 8. 14; तै एवैतदज्ञसा प्रत्यक्षं यजत्यज्ञसा ह वा अस्य दर्शपूर्णमासाभ्यामिष्टं भवति ŚatBr. II. iv. 4. 17; यथा क्षेत्रज्ञोऽज्ञसा नयेत् ŚatBr. XIII. ii. 3. 2; III. vii. 3. 7; अहरहरेवैतदज्ञसा स्वर्गे लोकमुपयन्ति JaimiBr. 2. 383; 3. 209; GopBr. ii. 2. 3; धानारुह इव वै वृक्षोऽज्ञसा प्रेक्ष संभवः BrĀraU. iii. 9. 28; अज्ञसैव भ्रातृव्यान-पहनानि Śaunako. 2. 1; होता दक्षिणेनौदुम्बरीमञ्जसेतरेऽपरया द्वारोत्तरां वेदिश्रेणीम-भिनिःसर्पन्ति ĀśvaSŚ. I. v. 11. 1; SāñkhāSŚ. v. 8. 2; एवमुक्तः प्रत्युवाच पूरुः पितरमज्ञसा MahāBhā. i. 79. 27 (comm. आर्जवेन); MahāBhā. iv. 33. 4 (Arjunamiśra अव्यवधानेन); उभे सेने ... स्थिते ... हन्तुमन्यो-न्यमज्ञसा MahāBhā. viii. 7. 39; viii. 67. 34; दूताः ... गिरिजं पुरवरं शीघ्रमासेदुरज्ञसा Rāmā. ii. 62. 14; अज्ञसा सत्यमुपगेयम् MahāBh. ii. 65. 10 (on iii. 1.86); स गच्छत्यज्ञसा विप्रो ब्रह्मणः सन्न शाश्वतम् Manu-Sm. 2. 244 (ManuBh. अज्ञसाच्छिद्येन मार्गेण but ManvaVi. शीघ्रम्); समिद्धिवंशादिष्वज्ञसा दीर्घेष्वपि तत्प्रकर्षभावाभावमपेक्ष्य भाक्तो ह्रस्वत्वव्यवहारः PadārthaSañ. 131. 3; VāyuP. i. 60. 49; BrahmāñḍP. i. 34. 54; नाज्ञसा निगदितुं विभक्तिभिर्यत्किञ्चित् निखिलाभिरागमे ŚiśuVa. 14. 23; न ह्यज्ञसा अतिमात्रस्य परमात्मनोऽङ्गुष्ठमात्रत्वमुपपद्यते BrahmSūBh. (Sañ.) 185. 7 (on i. 3. 25); तपसि ब्रह्मविज्ञानसाधने ब्रह्मशब्दो भक्त्या प्रयुज्यते अज्ञसा तु विज्ञेये ब्रह्मणि BrahmSūBh. (Sañ.) 425. 15 (on ii. 3. 5); TaiUBh. 215. 8 (on 1.11);

धानातोऽपि प्रेक्ष संभवो भवेत् अज्ञसा पुनर्वनस्पतेः BrĀraUBh. 485. 5 (on iii. 9. 27); 635. 12 (on iv. 4. 15); उल्मुकादौ यथान्यथाः परार्थत्वात् चाज्ञसा UpadeSā. 359. 31; रागाद्युत्थप्रवृत्तीनां निषेधेषु लयोऽज्ञसा BrĀraUBhVā. (Sambandha.) 381; संयोज्य क्रिययातस्तं व्याचष्टे श्रुतिरज्ञसा BrĀraVBhVā. i. 3. 318; i. 4. 951; लक्षयन्ति परं ब्रह्म नाज्ञसा तत्प्रचक्षते TaiUBhVā. 60. 23(2); 193. 10(2); प्रतीच्येवं प्रवृत्तं तत्सदसीति वचोऽज्ञसा NaiṣkaSi. 133. 6; व्यवधान-कल्पनविडम्बनया किमिहाज्ञसैव जनकं भवतु SañkṣeSā. 1. 375 (i. 278. 2) (comm. अज्ञसा साक्षाच्छक्या); 2. 193 (ii. 116. 20); ब्रज प्रतिज्ञाम्बुधिपरमज्ञसा RāmC. 4. 55; योगिनां हृदयाम्भोजे नृत्यन्ती नित्यमज्ञसा ŚāraTi. 1. 53; मिथ्या वा परमार्थो वा नाद्यः कश्योऽयमज्ञसा SañviSi. 96. 5; तस्यार्थस्तत्पदैस्तेन संक्षिप्य क्रिय-तेऽज्ञसा DaśRū. 1. 5 (comm. ऋजुवृत्त्या); यद्वासुदेवशरणा विदुरज्ञसैव BhāgP. ii. 7. 19; पारिजातेऽज्ञसा लब्धे सारज्ञोऽन्यत्र सेवते BhāgP. iv. 30. 32; ii. 10. 2; iii. 1. 31; NaraP. 6. 46; पौर्वापर्यपरामर्शाद् यदात्मनोऽज्ञसा वदेत् Bhām. 123. 19 (on i. 1.5); धनम्... न देवास्तत्करे कृत्वा समर्था दातुमज्ञसा DeviBhāP. iii. 16. 50; यथाज्ञसाज्ञानमपारवारिधिं सुखं तरिष्यामि AdhyaRā. vii. 5. 5; अद्रिशिखरं विमुञ्चनेवायमज्ञसा राममाजगाम RāmāCam. 6. 57(5); न तावद्रक्तविशेषबुद्धि-मनादृत्य शब्देनैवाज्ञसाऽर्थोऽनुमातुं शक्यते NyāyRa. 418. 17 (on 5(5). 47); अज्ञसा मुख्यया वृत्त्या आरम्भ इति सन्निकृष्टं प्रागभावमाह Kirāṇā. 120. 13; अज्ञसा मुख्यतः दीर्घत्वोत्पत्तौ कारणोपपत्तेः Kirāṇā. 212. 23; न खल्वन्तरेण द्वैतावमर्शं तद-धीननिरूपणमद्वैतमध्यक्षमज्ञसा साक्षात्कर्तुमलम् NyāyMa. 298. 3; 84. 5; Pāñca-Rā. (Nā.) iii. 1. 16; राजा प्रवरसेनोऽपि कश्मीरोत्पत्तिमज्ञसा । निखिलां मातृगुप्ताय प्राहिणोत् RājTa. (Ka.) 3. 321; विचिन्तयेत् ... तत्त्ववित्तत्वमज्ञसा YogSā. 10. 5; अत्राज्ञसानुरज राजनि राजमाने NaiṣC. 11. 77 (comm. अज्ञसा स्वत एव); अस्माकं च द्वे गती । ऊर्ध्वा । अज्ञसा च Pāñcā. 168. 23; प्रवक्ष्यामि कथालक्षण-मज्ञसा KathāLa. 1B. 2; अज्ञसा प्रियतमोरसि काचन ... स्वकुचमण्डलम् ... दधे VasaViKā. 6. 8; संसारः सुतरः शिवं करतलकोडे लुठत्यज्ञसा SindūPra. 10; नटः ... रेङ्गे रामाद्यवस्थाभिरनुकार्याभिरज्ञसा । रामादितादात्म्यापत्तेः प्रेक्षकान् रसयिष्यति BhāvPra. (Sā.) 194. 12(7); मुनयस्तदा यदनधीतमधीतवदज्ञसा । निगमजातमशेषम-वेक्ष्य तन्निरविशन्नैव मुक्तिमयीं दशाम् Yādavā. 3. 7; PāñcDa. 9. 27; अज्ञसेति । साक्षादित्यर्थः NyāySu. (Ja.) 277B. 8 (on ii. 1.2); अस्मच्छास्त्रं वेदं सूत्रसूचिताभिः श्रुतिभिर्युक्तिभिश्चाज्ञसा नैरन्तर्येण सादरं च शिष्यैर्विचारयामः NyāySu. (Ja.) 123A. 9 (on i. 1.5); CampaŚreKa. 197; StavMā. 246. 17; Nārāy. x. 61. 8; कियत्यपि दिने राजाचिन्तयन्नक्तमज्ञसा CitraPaC. 300; अज्ञसा अनायासेन Vira-Mi. (Bhakti.) 4. 22; **3** immediately, at once, quickly, soon, hastily अथाज्ञसैवैतन्मेतत्प्रत्यक्षमाधत्ते ŚatBr. II. ii. 1. 22 (but comm. अज्ञसा ऋजुवैव मार्गेण); श्रोभूते शुनासौर्यं सद्यो वाज्ञसा वा MānSŚ. 179. 6; युधिष्ठिरः । गुरुवद्भूत-गुरवे प्राहिणोद्भूतमज्ञसा MahāBhā. ii. 12. 28; गुणाः क्रोधाभिभूतेन न शक्याः प्राप्नुमज्ञसा MahāBhā. iii. 30. 20; vii. 92. 18; ix. 6. 5; ix. 13. 5; कृताञ्जलिरुवाचेदं रामागमनमज्ञसा Rāmā. iii. 11. 6; iv. 46. 1; मुक्तपद्विरावमज्ञसा KumāSañ. 8. 70; प्रविश्य चापि भगवान् तदृक्षविलमज्ञसा । अभिद्रुते कुरङ्गाय PāñcT. 2. 95 (9-11) (267. 4-6 F. N.); अज्ञसा रतः सारतः किमपि कन्दर्पकं दर्पकं न तनोषि VāsaDa. 209. 1; करेण पस्पर्शं सुषेणमज्ञसा VarāṅgaC. 21. 14; भिन्ना तेन सुजान्तरे महति सा जीवं जहावज्ञसा JānaPa. 4. 36; ParaS. 19. 31; तत्त्वस्वरूपानुभवाद्दुत्पन्नं ज्ञानमज्ञसा । अहं ममेति चाज्ञानं बाधते ĀtmaBo. 46; स्वलक्षणविविक्तैस्तेः प्रत्यक्षादभिरज्ञसा... शक्याः प्रविवेक्तुम् TantrVā. 80. 14 (on i. 3. 2); 766. 1 (on iii. 2. 1); प्रसीद चण्डि त्यज मन्युमज्ञसा KāvyañSū. iii. 1. 12 = Sara-Kaṅṭhā. 126. 13; भवपञ्जरं दृढमनज्ञनाज्ञसा । ... पुरुषो भनक्ति HarVi. 6. 160; विष्टपत्रयमलङ्घयताज्ञसा दूरमस्खलितया यशःश्रिया HarVi. 14. 8 (but comm. अज्ञसा स्पष्टम्); RāmC. 2. 42; NalaCam. 7. 10(13); BrKathāK. 99. 62; JinaS. 2. 9; LakṣmīT. 49. 23; महापद्मो मुजंगमः । आजगाम महानागं नीलं शरणमज्ञसा NīlaP. 960; VarāP. 51. 23; उदडीयत खे मुखेन विभ्रद् मुजगेन्द्रप्रतिमं तमज्ञसा सः NavaSāC. 5. 35; BhaviP. 29B. 17 (i. 8. 65); स्वकीयकर्मवन्धीयगुणान्विधुनु-तेऽज्ञसा DeviBhāP. viii. 19. 19; अनेकविज्ञानवचोभिरज्ञसा वियोजयन्ती पुरुषं स्त्रियं च ĀdiP. 13. 44; GaṇeP. ii. 53. 1; KalkiP. ii. 5. 29; Loc. 115. 18 (on 2. 28); शूलमखण्डयदज्ञसा ... रघुनायकसायकः RāmāCam. 3. 3; RāmāMañ. 448. 26; DaśāvaC. 8. 315; ŚātvaT. 4. 3; वृहितेन गजानां च जानीयाज्जयमज्ञसा Mānaso. ii. 20. 1156 = SūktiRa. 142. 6; सुतनु कथय कस्य व्यञ्जयन्त्यज्ञसैव GaṇRa. 1. 15(36); तिमिरमेव ... चित्तनाथमभिसर्तुमज्ञसा जायते स पथि हस्तदोषिका ŚrīKaC. 10. 27; RājTa. (Ka.) 1. 223; TriṣaSaPuC. ii. 3. 387 = VitaRā. 3. 4; जगद्देवस्ततः प्राग्देशतोऽज्ञसा । समेत्य राजापिपतिर्वं (वं) भूव EL. xxi. 164. 11; PāñcC. 1. 322; 2. 100; Surath. 2. 49; MalliC. 1. 218; न कलङ्की विधुः वि. तु स्थगित्वैवमज्ञसा VasaViKā. 4. 45; 7. 64; PārśvC. 3. 349; 6. 220; यत्प्रता-पौर्वतापः प्रतिनृपजलराशीनज्ञसा संजहार EL. xviii. 351. 31; SamarāSañ. 3. 107; लक्ष्मीः ... चैतन्यं विषसंनिधेरिव नृणामुज्जासत्यज्ञसा SindūPra. 76; Śrāṅgā-